



Tapasya

*Celebrating Bond
between Guru & Disciple*



**Transition from Information to Knowledge to
Experience to Wisdom (IKEW)**



A Devrukh Spiritual Prowess Pvt Ltd (DSPPL) initiative

This newsletter is specially for all students, teachers and parents. As Ajit Telang Sir used to say that the education of a student is a social triangle. Unless, teachers and parents do not form "perfect" angle, the educational triangle can never achieve the ideal "equilateral triangle" combination.



CONTENT

DATT JAYANTI SPECIAL

- 1 - GANPATI STORY PAGES 03-05
- 2 - DHAUMYA'S 3 DISCIPLES PAGES 06-10
- 3 - KACHA & DEVYANI STORY PAGES 11-14

SPECIAL

UNCANNY NEXUS - A JOURNEY BEYOND VOL 01: THE AWAKENING OF SEEKERS - THE MYSTERY UNFOLDS | PAGES 15-18

SPECIAL

Dip. SAC Ashwini Telang, Mumbai
Clinical Psychologist &
Director, DSPPL

SCIENCE OF LEARNING 22 | PAGE 19-21

CA Pranjal Joshi, Pune

PASTTIME... | PAGE 22

Thought for the Month
Viivek A Pandey, Vadodara

GOLDILOCKS AND THREE BEARS | PAGES 23-24

Finance Lesson of the Month
CA Amit Dhadphale, Pune

INDUSTRY INSPIRATIONS PAGES 25-27

Interview with Mr. Srikanth
Narasimhan ; Co-founder - Veda
Corporate Advisors, a leading
Investment Bank ; 25+ years
corporate experience

कांच का टुकड़ा | PAGE 27

Jayanti Katdare. Ratnagiri

UNDERSTANDING CONSTITUTION (ARTICLE 22) | PAGES 28-29

Kalpita Rakesh, Mumbai

DSPPL COMICS | PAGE 30

Komal Amol, Bengaluru



**Ajit Telang Sir
Our Inspiration!**





Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

01. गोकर्ण महाबलेश्वर की कथा

गुरुचरित्र के छठे अध्याय में गणेश जी की एक बहुत रोचक कथा आती है. गोकर्ण महाबलेश्वर शिवलिंग की स्थापना कैसे हुई और उसमें श्री गणेश जी का कैसे योगदान था इसकी यह कथा है.

बहुत प्राचीन समय की बात है. पुलत्सा नाम के ब्राह्मण की पत्नी कैकसी शिव भक्त थी. हर दिन शिवलिंग की पूजा किए बगैर वह अन्न सेवन नहीं करती थी. महाक्रूर रावण, इसीका पुत्र. उसने अपनी मा को मिट्टी का शिवलिंग तयार करके उसकी पूजा करते हुए देखा और उसे गुस्सा आया.



उसके बाद रावण ने घनघोर तप किया और अपने तप से उसने शिवजी को प्रसन्न कर लिया। जब उनसे वरदान माँगने का समय आया, तो रावण ने कहा:

“मुझे वह शिवलिंग दें जिसे कोई हिला न सके. स्वयं शिव की शक्ति से युक्त आत्मलिंग।”

भगवान शिव ने प्रसन्न होकर रावण को अतुलनीय आत्मलिंग प्रदान किया, और कहा:

“मैं तुम्हें आत्म लिंग दे रहा हूँ. इस आत्म लिंग को लंका लेकर जाओ, 3 साल तक इसकी पूजा करना, रुद्राभिषेक करना, तो तुम जो चाहोगे वह सब कुछ इससे पा सकते हो, लेकिन एक शर्त है, यदि यह लिंग पृथ्वी पर कहीं रख दिया गया, तो वही स्थायी रूप से स्थापित हो जाएगा।

रावण यह वरदान लेकर लंका की ओर चल पड़ा। देवताओं को चिंता हुई कि यदि यह आत्मलिंग लंका पहुँचा, तो रावण अजेय हो जाएगा।

इसलिए सभी देवता भगवान विष्णु जी के कहने पर गणेश जी से सहायता मांगने आए. भगवान विष्णु जी के कहने पर नारद जी तुरंत रावण जा रहा था उसके रास्ते में आ खड़ा हुआ. नारद ने रावण को कहा की आपको वरदान प्राप्त हुआ यह अच्छा है पर आप हर दिन तीन बार संध्या करते हो, शाम का समय आने लगा है तो संध्या करने की आपकी साधना को आप मत भूलना चाहे तो मैं तब तक इस शिवलिंग को मेरे हाथ में पकड़ता हूँ.

रावण ने मन में सोचा कि नारद जी पर भरोसा करना सही नहीं होगा . अगर किसी देव देवताओं के कहने पर नारद जी यहां आए होंगे और उन्होंने शिवलिंग को यहीं रख दिया तो क्या करूं, मेरी सारी तपश्चार्य व्यर्थ हो जाएगी .





Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

01. गोकर्ण महाबलेश्वर की कथा contd...

रावण के मन की बात नारद जी ने पकड़ ली . वह मन ही मन मुस्कुराए और बोले "अरे रावण मैं तो तेरी सहायता करने के लिए कह रहा था पर अगर तुझे मेरी सहायता नहीं चाहिए तो ठीक है" . इतना कहकर नारद जी चल पड़े पर रावण के मन में अब दुविधा खड़ी हुई.

संध्या न करूं तो साधना में भंग हो जाएगा और संध्या करने के लिए हाथ में यह जो शिवजी का आत्म लिंग है उसे अगर जमीन पर रख दूं तो सारी तपश्चार्य बेकार जाएगी, अब करूं तो क्या करूं ? तभी गणेशजी एक छोटे ग्वाले (बालक) के रूप में वहां प्रकट हुए। बालक रूपी गणेश जी को देखकर रावण को लगा कि यह बालक उसकी मदद कर सकता है .

रावण ने कहा: " अरे बालक इधर आना, तेरा नाम क्या है यह तो बताना"

बालक रूपी गणेश जी बोले "मैं क्यों आऊं आपके पास ? मैं तो आपको जानता भी नहीं और मेरी मां और पिताजी ने कहा है कि किसी अजनबी से बात मत करना"

रावण को विश्वास हुआ कि यह बालक जरूर काम पूरा करेगा, उसकी मदद करेगा . रावण ने कहा "अरे मैं तुझे अच्छा उपहार दूंगा तू मेरा एक काम कर ."

गणेश जी वहां से भागने का नाटक करने लगे, पर रावण को वह समझ में नहीं आया और रावण ने उनको पकड़ लिया .

"बालक, तू यह आत्मलिंग थोड़ी देर पकड़ ले, मैं पूजा कर लूं।"

गणेशजी ने कहा:" मैं क्यों पकड़ो यह आत्म लिंग ? मैं तो छोटा बच्चा हूं . यह भारी वजनदार लग रहा है . मैं तो इसको पकड़ नहीं सकता ."

रावण को अब पूरा विश्वास हो गया कि यह बालक उसे धोखा नहीं देगा .

रावण ने कहा "अरे इतना तो मेरा काम कर ले ."





Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

01. गोकर्ण महाबलेश्वर की कथा contd...

गणेश जी भी वही तो चाहते थे कि रावण का पूरा विश्वास उन पर बैठ जाए . गणेश जी बोले “ ठीक है तुम इतनी जिद कर रहे हो तो मैं पकड़ लूंगा, पर यदि भार अधिक हुआ तो मैं तीन बार आपको पुकारूँगा, और यदि आप न आए, तो इसे नीचे रख दूँगा.”

रावण के पास इस शर्त को स्वीकारने के अलावा कोई और पर्याय था ही नहीं .

रावण पूजा में व्यस्त हो गया.

गणेशजी ने उसे एक बार, दो बार, तीन बार पुकारा, पर रावण अपनी संध्या वंदन इतने कम समय में पूरी नहीं कर पाया और इसलिए वहां नहीं आया।

अपनी योजना अनुसार गणेशजी ने तुरंत आत्मलिंग को पृथ्वी पर रख दिया।

जब रावण लौटा और देखा कि आत्मलिंग जमीन पर रखा है, तो वह क्रोधित होकर उसे उखाड़ने लगा। परंतु शिवजी की वाणी सत्य थी . आत्मलिंग वहीं दृढ़तापूर्वक पृथ्वी में स्थापित हो गया।

रावण ने क्रोध में उस लिंग को खींचा, जिससे:

उससे नाभि के आकार का छिद्र बना,इसलिए स्थान को गोकर्ण (गो—गाय, कर्ण—कान जैसा छिद्र) कहा गया।

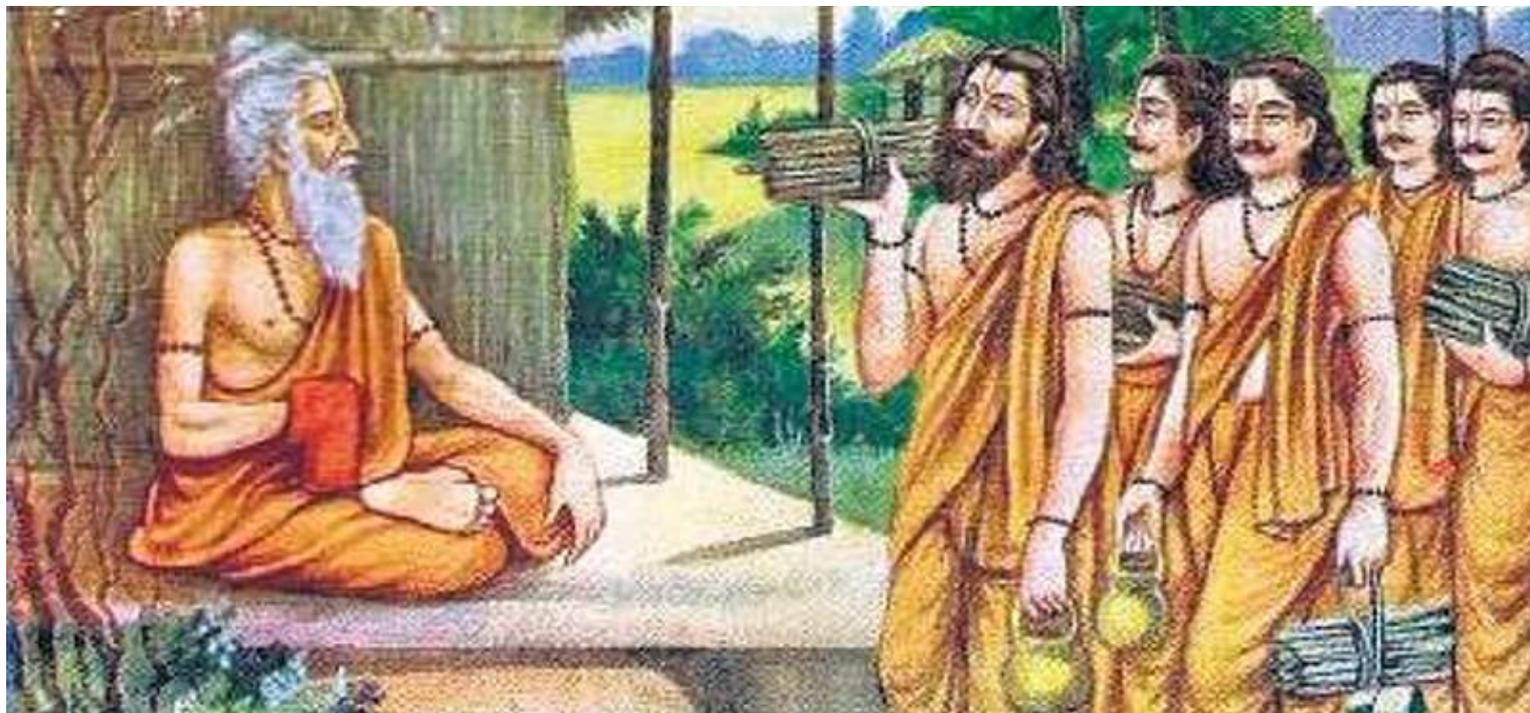
वहीं शिवलिंग महाबलेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि उसकी शक्ति महाबल थी।

देवताओं ने गणेशजी की स्तुति की और रावण भी अंत में शांत होकर शिव की आराधना करने लगा।





02. Service to Guru: Dhaumya's Three Disciples



In ancient times there was a great sage of the name Ayoda Dhaumya. He had three students, named Upamanyu, Aruni and Veda. The story of this guru and his disciples is told near the beginning of the Mahabharata. It tells how he tested them and how through his mercy they were able to understand the scriptural teachings. On hearing it, one cannot help but be amazed.

One day, Dhaumya made one of his disciples, Aruni, who came from the kingdom of Panchala, to go and stop the water from flowing out of a rice field by repairing a breach in the dyke. In India, paddy fields are normally surrounded by low dykes of clay that keep the seedlings under at least a few centimeters of rain or irrigation water, without which the rice will not flourish.

Aruni took his guru's order seriously and immediately went to the spot, and did everything he could to stop the water from flowing out, but the earth he put in the breach simply washed away in the strong current. When despite numerous efforts he was unable to break the stream of water from draining out of the field, he became very worried that he would fail to do his guru's bidding, so he went and lay down in the breach himself. This successfully held the water back.

After some time, when Aruni had not yet returned from his errand, Dhaumya started to worry, for he was naturally very affectionate towards all his disciples. He took Upamanyu and Veda with him and set off to the paddy fields.





Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

02. Service to Guru: Dhaumya's Three Disciples contd...

He called out, "Aruni, where are you? Come hither, my child."

On hearing his guru's voice, Aruni got up and came to him, bowing at his feet. On being asked where he had been, he answered, "I was lying down in the dyke to stop the water from going out, as I was unable to find any other means. I remained there until I heard your voice and came here. The water is now escaping again, so please tell me what I should do."

Dhaumya Rishi was very pleased with Aruni and blessed him: "O Aruni, since



you arose from the ditch and reopened the course of water, you shall henceforth be called Uddalaka as a mark of my favor. And because you have been obedient to me, I bless you that you shall obtain all good fortune and that the meaning of all the Vedic scriptures will shine in you."

Another day, Ayoda Dhaumya ordered his second disciple, Upamanyu, in the following way, "Go, my child, and look after the cattle." Upamanyu immediately did as he was told. From that day on, he went every morning with the cows and watched them graze until the evening when he returned to his guru's ashram. Then he would come and salute him respectfully.

One day, when Upamanyu had paid his obeisance, Dhaumya remarked that he was looking quite sturdy. So he asked, "My child, what are you doing for food during the day? You are looking rather plump."

Upamanyu answered, "Master, I support myself by begging." Dhaumya immediately told him, "Nothing a disciple obtains in alms should be taken without first offering it to his guru."

From that day on, whatever alms Upamanyu received from begging, he offered to Dhaumya,



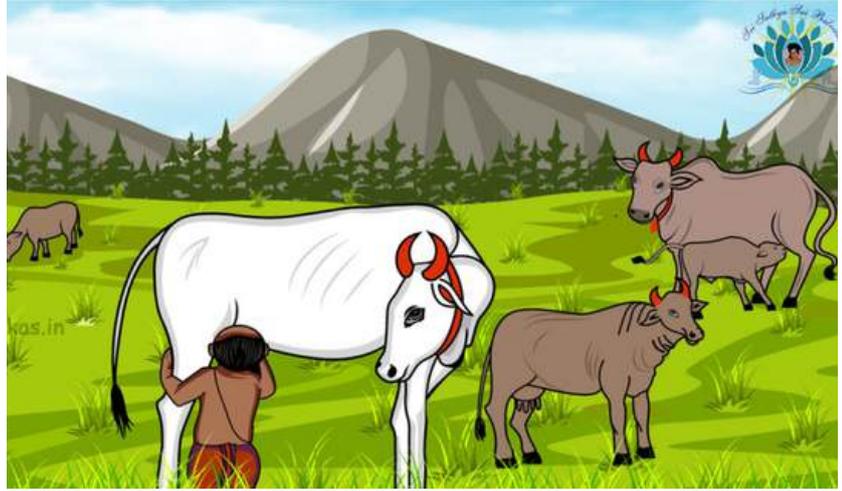


Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

02. Service to Guru: Dhaumya's Three Disciples contd...

who took it all without leaving Upamanyu anything. Even so, the young lad made no complaint and went on attending the cattle from morning to night, returning in the evening to pay homage to his guru.

After a few days, Dhaumya observed that Upamanyu was not losing any weight and asked him once again, “My child, I take



everything you obtain by begging without leaving you anything at all. So how are you feeding yourself now? I see that you are still looking rather plump.’

Upamanyu said, “Master, after I make over everything obtained in alms to you, I go begging a second time so that I can eat.”

Dhaumya replied, “This is most improper. By doing this, you are making it more difficult for other beggars. You have shown yourself to be quite greedy.”

Thenceforth Upamanyu stopped going to beg for a second time. A few days later, Dhaumya observed that his disciple was still looking fat, so he asked him again, “My child, I take everything you obtain by begging, without leaving you anything at all. You have stopped begging for alms a second time. And yet I see that you are still quite plump. What are you eating now?”

Upamanyu answered, “Master, I am now living on the cows' milk.” Once again, Dhaumya said, “It is not proper for you to take the milk of the cows without first obtaining my consent.” Upamanyu once again acknowledged his guru’s criticism and stopped taking milk from the cows. However, after a few days, when Dhaumya observed that he was still fat, he said, “My child, you no longer eat alms, nor drink milk, and yet you are still fat. What are you doing for subsistence now?”

This time Upamanyu said, “Prabhu, when the calves suckle their mother’s teats, their faces become covered with froth. I lick this froth to keep body and soul together.”

Again, his guru said, “This too is improper and unjust. Calves are by nature generous creatures. Seeing your hunger, they do not drink their fill so that more froth will be left for you. As a result they go hungry. I want you to stop taking this froth also.”

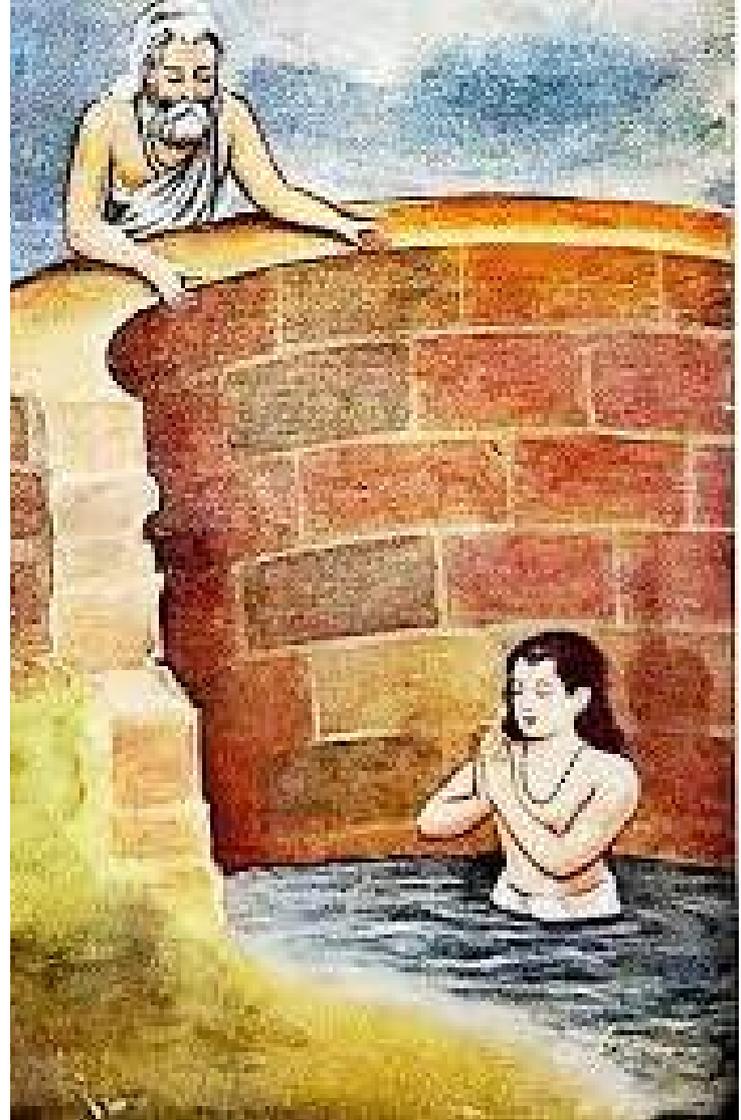




Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

02. Service to Guru: Dhaumya's Three Disciples contd...

Upamanyu nodded his assent and the next day went as before to tend the cows. Now left with no other option, he became so hungry after a few days that he began to eat fruits and leaves. Not knowing which were edible and which not, he ate some milkweed leaves that caused him to go blind. Then, having lost his ability to see, he fell into an abandoned well and was unable to get out. That evening, when the sun set, Dhaumya saw that Upamanyu had not yet come home, so he set off with his two other disciples to find him. They called and called until finally they heard Upamanyu's weak voice rise from the bottom of the well. Dhaumya asked him how he had happened to fall into the hole. When Upamanyu had told him everything, Dhaumya said, "Pray to the Aswinikumars, the twin physicians of the gods, and they will restore to you your sight."



Upamanyu, thus directed by his preceptor, sang a Vedic hymn invoking the Aswins. Shortly thereafter, they appeared to him and said, "We are satisfied. Take this cake and eat it. It will restore your sight." Upamanyu answered, however, "O Aswins, I believe that you are telling me the truth, but I dare not eat this cake without first offering it to my spiritual master." The Aswins told him, "You know, your guru once invoked us just as you did. We gave him a cake like this one and he took it without offering it to his master. Why don't you do as he did?" Upamanyu refused to be swayed, however. "O Aswins!" he said, "Forgive me, but I have vowed to take nothing without first offering it to my preceptor."

The Aswins then said, "We are pleased by your devotion to your guru. Your sight shall be restored and you shall enjoy all good fortune."





Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

02. Service to Guru: Dhaumya's Three Disciples contd...

When he had recovered his sight, Upamanyu climbed out of the well and bowed to his spiritual master. Dhaumya was very pleased with him for passing all the tests he had set for him and said, "You shalt obtain all the prosperity the Aswins have blessed you with. Moreover, all knowledge of the Vedas and the dharma shastras will illuminate your heart."

Then it was the third disciple Veda's turn to be tested. Dhaumya told him to stay in his house and act as his servant there. Veda did as he was told and served faithfully in the guru's household for many years, bearing heat and cold, hunger and thirst, without complaint. This was the trial devised by Ayoda Dhaumya to test the resolve of his pupil. Years passed and Veda did all his chores uncomplainingly. Dhaumya was very much pleased with his dedication and so instructed him in all the wisdom contained in the scriptures, until Veda equaled his guru in knowledge.

This Veda then returned to his home town where he became a preceptor himself. One of his disciples was Janamejaya, the descendent of the Pandavas and king of the Kuru dynasty, who later was the principal audience for the Mahabharata, which he heard from Vaisampayana.

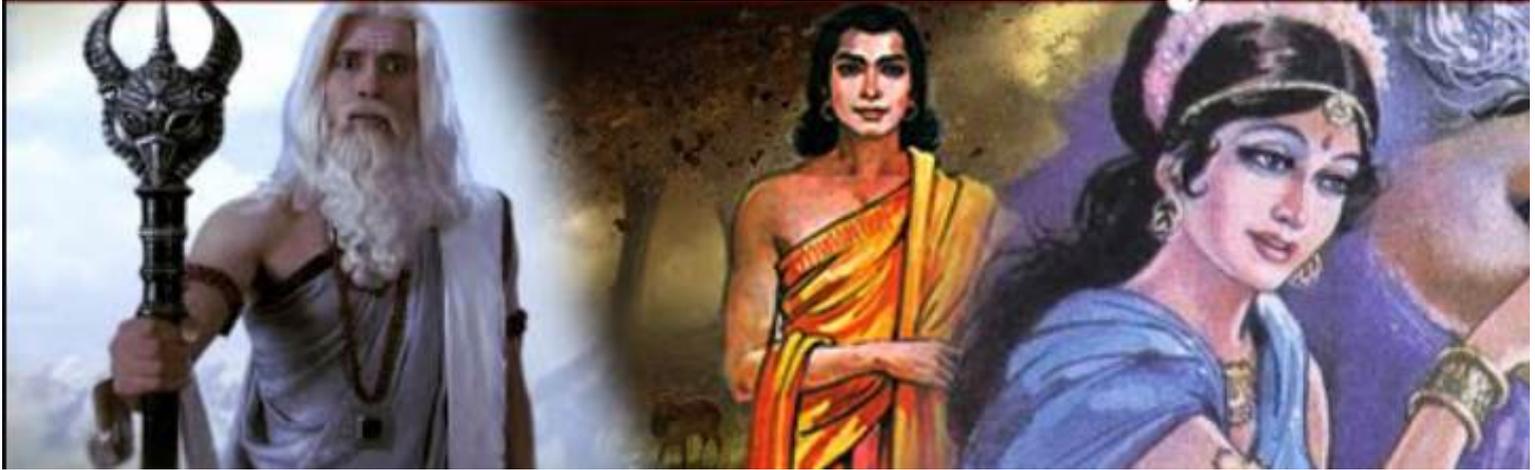
In the past, spiritual masters tested their disciples in this way. When they saw the sincere service attitude of their disciples, they blessed them with knowledge so that nothing remained for them to learn.





Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

03. Kacha - Devyani Story resembles Sadhak's inner struggle and Guru shows the way



In olden days the gods and demons were often at war. Shukracharya, the Guru of the demons, would recite Sanjeevani mantra and the dead demons would be made alive. Therefore it was rather difficult for the gods to win the war. Indra, the king of the gods went to Shiva and told him this fact. Shiva was very angry and he asked to call Shukra. Nandi, Shiva's bull, went to Shukra, who was in meditation at that time. Nandi therefore held him in his mouth and brought him to Shiva. Shiva at once devoured him. After some days, Shukra came out of the body of Shiva through his urine. He again started reciting Sanjeevani mantra and brought the demons to life.

- Indra told Brihaspati, Guru of Gods, about Amrit Sanjeevini mantra of Shukracharya and said, 'The guru of the demons makes them alive with the help of this mantra. You being the Guru of the gods why should you not protect the gods?'
- Brihaspati said, 'If Sanjeevini mantra is heard by six ears, it will lose its importance. So it would be better to send someone as a pupil to learn the mantra from Shukracharya. Let my son Kacha be sent to him. He will learn the mantra and return.'
- Kacha took leave of the gods and came to Shukracharya. He bowed to him and stood before him. Shukracharya inquired who he was and why he had come to him. Kacha replied 'I am a Brahmin-Kumar. Hearing your fame, I have come to learn at your feet. Shukracharya's only daughter Devayani was standing by her father. She liked the Brahmin youth and requested her father, Shukracharya to accept him as his pupil. Shukracharya agreed and Kacha started staying with him.





Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

03. Kacha - Devyani Story contd...

The demons did not approve of this as they suspected that the gods would learn the Sanjeevini mantra from Shukracharya and then it would be impossible for them to win a victory over them. Therefore, when Kacha had been to the forests for bringing darba (a kind of grass), the demons killed him. In the evening, when Kacha did not return home, Devayani requested her father to bring him home soon.

- Shukra, by intuition knew that was dead so he recited Sanjeevini mantra and brought him to life.



Kacha then came home. Once again when Kacha had been to the forest, the demons killed him and the pieces of his body were thrown in all directions. Devayani again showed anxiety for Kacha. Shukra again recited Sanjeevini mantra and brought him to life, as Devayani was his only daughter and Shukracharya had great affection for her. The demons now contrived to kill Kacha on Ekadashi fast day. They then mixed his flesh in wine and offered it to Shukracharya for drinking. For the third time when Kacha was missing, Devayani wept and requested him to bring him to life. Shukracharya realized that Kacha was not seen anywhere but he was in his belly. He told Devayani that Kacha was in his belly and if he is taken out, he himself would die.

- Devayani said, 'You are bringing to life all people and saying that you would die. How is this? Kacha is my soul. If he does not come back, I will give up my life.'
- Shukracharya: 'Besides myself none else knows Sanjeevini mantra. There is a condition that this mantra should not be divulged to anyone. If it is heard by six ears (three persons) it will lose its effect. This is a problem with me.'

- Devayani said, 'Teach me the mantra. I shall recite it and make you alive.'

- Shukracharya: 'The Shastras prohibit telling a mantra to a woman.'

- Devayani who was greatly dejected said, 'Then you may live with your mantra happily. I will give up my life.' Saying so she fell on the ground senseless. Shukracharya brought her to consciousness and gave her the Sanjeevini mantra. While he was reciting the mantra, Kacha, who was in Shukra's belly, also heard it. Shukra recited the mantra and Kacha came out of his body tearing his belly. Consequently Shukracharya fell dead.





Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

03. Kacha - Devyani Story contd...

- Now Kacha folded his hands and said to Shukracharya, 'I have studied at your house so far. The demons do not allow me to live here peacefully. Kindly therefore allow me to go home now.'

- Devayani interrupted, 'I have made you alive thrice. I love you. You should marry me.' Kacha : 'Being the daughter of my guru, you are my sister. You made me alive from time to time and so you are like my mother. If I marry you people will blame me.'



- Hearing this, Devayani felt sorry and at the same time she was enraged. She cursed him, 'Your learning will be futile. You will forget all that you have learnt.'

- Kacha said, 'You have cursed me in vain. You will marry a person other than a Brahmin. Your father has taught you Sanjeevini mantra against the rules of Shastras. Hence it will not work now.' Saying this Kacha went away.

- Seeing that Kacha had returned, Indra and other gods were delighted.

This story from Adhyay 35 of Guru Charitra is a beautiful allegory for the inner spiritual struggle of a seeker. Let's map the characters and events to the seeker's internal journey:

✓ Demons = Shadripu (Six Inner Enemies)

- Kama (Desire), Krodha (Anger), Lobha (Greed), Moha (Delusion), Mada (Pride), Matsarya (Jealousy)
- These tendencies keep regenerating even after we think we've conquered them—just like demons revived by Shukracharya.

✓ Shukracharya = Sense of Incompleteness (*apoornata*)

- Shukracharya keeps reviving the demons again and again, just as a sense of inner incompleteness keeps reviving old desires, fears, and tendencies even after they seem to have been destroyed.
- Even when Shiva "swallows" Shukracharya, he re-emerges, showing how this basic incompleteness returns in new forms unless it is fully understood and transcended.





DSPPL

Datt Jayanti Special - Stories from Sri Guru Charitra

03. Kacha - Devyani Story contd...

✓ Indra = Our Senses

- The senses (Indra) feel threatened by the demons repeatedly coming back to life, symbolizing how sensory life is constantly disturbed by resurfacing desires and inner agitations.
- Indra approaching Shiva for help represents the senses recognizing their limitation and turning toward a higher center (inner stillness) when overwhelmed by the restlessness caused by inner incompleteness.

✓ Shiva = Supreme Awareness

- When invoked, Shiva “swallows” Shukracharya—symbolizing that only pure awareness can dissolve incompleteness(*apoornata*).
- But incompleteness(*apoornata*) is subtle—it re-emerges (through urine) because impressions (*vasanas*) remain.

✓ Brihaspati = Guru

- The inner or outer Guru who gives guidance. Suggests sending Kacha (disciple’s effort) to learn the inner knowledge.

✓ Kacha = Son of Guru or the Guru Tatva facilitating Seeker’s Persistent Effort

- Goes repeatedly into the “forest” (inner silence) to gather “darbha” (discipline).
- Gets “killed” by demons (inner enemies) again and again—symbolizing repeated failures.
- Revived by Shukracharya (incompleteness)—showing how ego keeps the seeker bound even after setbacks.

✓ Devayani = Moh (Emotional Entanglement)

- When Kacha refuses to marry her on rightful grounds, she cannot accept reality and immediately curses him, showing how moha turns into anger, hurt, and destructive impulses when attachment is thwarted. This obsessive insistence is the nature of moha: “I want this, no matter what is right.”
- Devayani as Moh represents emotional entanglement that clouds discrimination, creates curses (self-sabotage and resentment), and complicates the seeker’s path, even when genuine spiritual progress has been made.



Uncanny Nexus - A Journey beyond Volume 01: The Awakening of Seekers

The Mystery Unfolds

by Dip. SAC Ashwini Telang, Clinical Psychologist & Director, DSPPL

At University of Soka, a competition for knowledge is about to change the fate of those who seek it. What begins as a scholarly pursuit soon takes an unpredictable turn, leading the seekers beyond textbooks and theories into something far greater—an unravelling of ancient forces hidden in time.

When an artifact of unknown origin is discovered, subtle synchronicities begin to emerge, guiding the researchers toward a mystery buried deep in the past. Their rivalry fuels their quest, pushing them to uncover forgotten wisdom, but the more they dig, the stranger the events become.

As their journey unfolds, they encounter hidden temples, fragmented truths, and cosmic connections that defy all logic. But something beyond human comprehension has already been set into motion. The air shifts, destinies converge, and an unseen force whispers a warning:

Have they stumbled upon mere knowledge, or awakened something far greater?

The first volume - *The Awakening of Seekers* - of *Uncanny Nexus* lays the foundation for a mystery that transcends time itself. But this is only the beginning.

THE MYSTERY UNFOLDS

Everyone looked in the direction of Haruka, Karunashankar, and Hyeon, who had just arrived with some books in their hands. Yug, out of concern, asked, “Where have you been?” Hyeon replied, “Oh! We were actually distracting the librarian for you guys.” Jigyasa impulsively said, “Yug, you just got your answer. These are the people who saved us. Now I guess it will be easy for you to understand how important it is for us to split into two groups.” Karunashankar immediately understood the situation and conveyed it to Haruka and Hyeon. Daiki suggested to Jigyasa, “Why don’t we make chits with everyone’s name on it and pick up only 6 of them who will stay here behind while the rest can explore the mysterious object?”



Uncanny Nexus - A journey beyond Volume 01: The Awakening of Seekers

Contd...

Jigyasa agreed, and so they made chits with names on them. Yuki was asked to pick any six chits without looking at them and hand them over to Hyeon. As Hyeon received each chit, he read the names aloud, “Yug,” “uhm next one is ... Daiki,” “Let’s see the third one, Rutva,” “here comes the next one, Yuki?” He looked confusedly at Yuki standing next to him before resuming, “and here’s the sixth one, Avenlee.”

Jigyasa then stated, “Okay then, the rest of us are going to explore the mystery today. Are you excited?” Aniya, Ved, Haruka, Dhairya, and Hiroshi nodded in affirmation.

Karunashankar, however, didn’t seem to respond to Jigyasa’s words. Concerned, Jigyasa went near him and inquired why he seemed so distant. He replied, “I feel sad for Ave. She seems to really want to explore this object. Can I request you to replace me with her? I’m happy either way, but looking at her sad face, I just don’t think we should hurt her feelings.”

Jigyasa, smiling, mentioned, “Look KS, it’s not like we manipulated anything. You saw it yourself, didn’t you? Next time, we’ll let them go to explore if need be. This way, everyone will get a chance to explore. Okay? Are you getting what I’m saying?”

Karunashankar nodded, understanding Jigyasa’s point. “Alright, I get it. Let’s stick to the plan.” With the teams decided, Jigyasa rallied everyone, “Okay, team, let’s head back to solving the mystery.” The group split into two, with one team staying behind to observe and distract if needed, while the other team moved closer to the glowing object, ready to uncover its secrets. Jigyasa then mentioned to everyone present, “I think we should name both the groups of Ensemble अनंत (Anant) to make it easier for us to address each other. What say do you have on this?”

Karunashankar instantly replied, “I guess it would be easier indeed. But let the names be based on the activities we do. In short, everyone gets to be recognized in both groups.”

Rutva and Avenlee seconded his idea immediately. Ved added, “the word ‘research’ as my father used to say that it has come from the word ‘Rishi’ that means the one who researches, explores.



Uncanny Nexus - A Journey beyond Volume 01: The Awakening of Seekers

Contd...

While 'Munis' looked after the common people and presented the research in a more digestible format that is easy to inculcate in one's day to day lifestyle" Thus, the groups were named based on their activities: the ones exploring were called ऋषि (Rishis), while the ones guarding were given the name मुनि (Munis).

Jigyasa smiled, "Perfect! Now, Team ऋषि (Rishis), let's get ready to explore the mysterious object. Team मुनि (Munis), keep an eye out and distract anyone if needed."

Team Munis (मुनि) look around to make sure no one pries on the research team ऋषि (Rishis), as team ऋषि (Rishis) approached the mysterious object, the air seemed different. Aniya took the object in her hands. As she observed it carefully, Dhairya patiently waited for her to report what it was like. Aniya abruptly said, "Hey D, look at this." Showing him the object. Dhairya in response leaned forward to have a better view, inquired, "Ann, doesn't this look like an umbrella or a lampshade?"

Aniya whispered in his ear, "Yes indeed. That's why I called you to show. Its surface seems to be textured yet smooth and the fabric is quite thick one. But it seems it has some kind of lever inside it."

"I think we should report it to the team ऋषि (Rishis) first. I'll be back soon," Dhairya said, immediately standing up and walking towards Jigyasa and the others from team ऋषि (Rishis). "ऋषि (Rishis), we just examined the object. It looks like a greenish-blue coloured umbrella or rather a lampshade and also seems to have a small lever inside. What do you suggest we should do?"

Jigyasa plunged in and asked Dhairya to hand over the mysterious item to her so that she could get some insight about it while holding it in her hands. She examined it closely, turning it around to see if there were any markings or clues. "This is intriguing," she said thoughtfully. "Let's see if we can figure out what this lever does. It might be the key to understanding this object."



Uncanny Nexus - A journey beyond Volume 01: The Awakening of Seekers

Contd...

The team gathered around, each member offering their observations and theories. Haruka suggested, "Maybe the lever activates something inside. Should we try pulling it?"

Jigyasa nodded, "Let's be cautious but give it a try. Aniya, since you found it, would you like to do the honours?"

Aniya, with a mix of excitement and nervousness, carefully pulled the lever. The object began to hum softly, and the glow intensified, casting a mesmerizing light around them.

At the same moment, Team मुनि (Munis) sensed the shift in the air. Avenlee exchanged a glance with Yuki, feeling an odd pressure build around them. A faint tension settled over the space—it would be harder to keep distractions going if this phenomenon intensified. Yet, despite their initial concern, they focused on their task.

Back near the object, ऋषि (Rishis) watched in awe, waiting to see what would happen next. The air around them seemed to form a whirlpool.

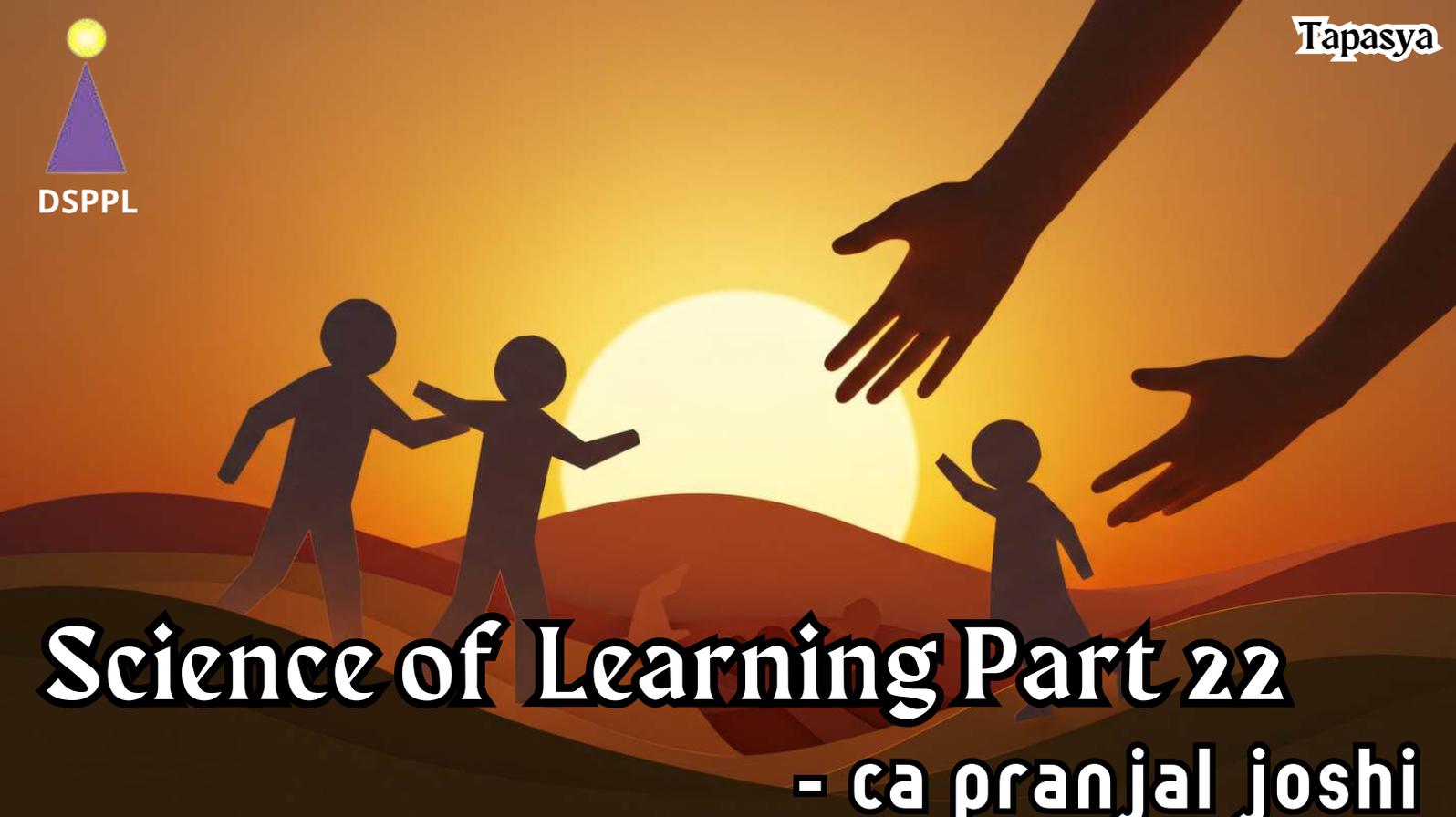
TO BE CONTINUED...



Dip. SAC Ashwini Telang, Mumbai

Technical Content Head , Faculty & Monthly magazine chief editor
Dip SAC and NCFE Certified Industrial Psychologist and transactional analyst with specialization in Clinical Psychology. Reiki Master conducting training programs in India and abroad, co-author for books Holistic Parenting and Personality Development for modern youth Managing Partner- Synergesic - a Business Research firm





Science of Learning Part 22

- ca pranjal joshi

New Generation, New Dimensions !

We all know that the blueprint of our entire personality is embedded in Human DNA. Personality manifests into 5 dimensions viz. Physical, Emotional, Mental, Intellectual and Spiritual. Each individual is different in all 5 aspects from another individual due to this DNA composition. Nonetheless all human beings fall within certain parameters or yardsticks in each of these 5 dimensions which makes “human” different from other creatures on this planet. But what will happen if all these 5 dimensions are changed totally from all earlier human generations? A quantum leap, the structural change in humans? Something like totally different version or blueprint of human personality?

The intensive research led by our Guruji Ajit Telang Sir since the year 2004, covering more than 10,500+ families from India and USA from varied backgrounds highlights this particular aspects. The research reveals 28 characteristic traits in the new generation which are totally different from all earlier human generations impacting all of 5 dimensions stated above. No longer has this remained merely a generational gap, it’s much more than that. This sudden transition has impacted our day to day life from home to schools and colleges, corporates, Govt organizations, Social circles, every place. DSPPL has presented these findings with several organizations across India including medical field experts and they all have consented these facts when presented in the form of our daily experiences.

Recently on very famous “Kaun Banega Carodpati (KBC)” TV show a small boy aged 10 years appeared in season 17 of the KBC show. As soon as he sat down, he told host Amitabh Bachchan that he already knew the rules and asked him not to repeat them. He began answering several questions even before Mr Bachchan could read out the multiple-choice options,



Science of Learning Part 22 ..CONTINUED

repeatedly saying “lock karo” to choose his answers. During one particular question, about the first “Kanda” (book) of the Valmiki Ramayana, he asked for the options for the first time, then selected Ayodhya Kand and even said, “Sir, ek kya usmein chaar lock laga do” (put four locks for this option). That answer turned out to be wrong. The correct answer was Bala Kand. Because of this mistake, he lost the game and walked away with zero prize money. The episode went viral, and many viewers criticized his behavior as arrogant and disrespectful. Some defended him, noting that he was just a kid and might have been nervous. Many viewers blamed his parents for what they saw as a lack of manners, several called his behaviour “ill-mannered” and directly linked it to “bad parenting.”

Our point of discussion is not to criticize or to defend the behavior, or even to go into the details of comments from netizens and even not to comment on the specific parenting aspects of this child.

The larger question is do we witness children and youth having the feeling of royalty, Feeling of “Deserving to be here” and are surprised when others don’t share that. Students having totally different concepts of respect and love, who at times, may be stubborn in attitude, who get easily distracted. Children and youth having difficulty with the absolute authority (Authority without explanation or choice), Difficulty in hierarchy based systems, the one who don’t like to be corrected, get bored easily, having “I Know” approach in many subjects, which may sound arrogant to those who do not know this trait? Students with high intellect, but who could not complete their exam question paper in time or loses the sense of time and space? Students talking more with their pets than humans, suffering from many allergies and obsessed with Electronic Gadgets? If yes, these have been few of the traits identified for these new generation. Please do not label it as “good” or “bad”. It is not about that, but it is about just “knowing this fact”. The transition has already occurred, the change has already happened, the human consciousness has taken a great transition with this structural change.

From the academic perspective, the teachers are finding it very difficult to manage this young generation students, DNA scientist at one point of time have called them “Indigo Children”. Difficulty with the teachers is that the age old technique of “carrot and stick” or “appreciation and punishment” doesn’t work well with these students.



..continued

While they consider appreciation as their right, and with punishment go to the stage of depression. Their attention span is hardly 15 minutes and biological clock is likely to be of 13.5 hours, and that's why many of them feel hungry in the midnight and sleepy in the morning. Maslow's hierarchy has reversed for them, they have very less inclination towards physiological needs and high focus on self-actualization. They are hidden siddhas, born with the Pratyahari trait, which ranks at 5th stage in Sage Patanjali's Eightfold path. All our earlier generation need to start from Yamas, then Niyamas, then Asana, and then Pranayam and finally to the stage of the Pratyahar where this new generation is already standing. They are near to Dhyan (or concentration), a crucial aspect of the studies. But neither have they known this fact, not the parents or teachers and that's why probably, they refuse to follow our so called discipline and reject our life patterns. As a parent and a teacher we all need to be aware about this.

Education does not mean necessarily to make students knowledgeable but to see that they contribute to the enrichment of human life experience in a larger way. The Industrial Model of Life has started treating students as a part of the industrial process called education. That possibly has given rise to an education system which standardizes the parameters of the process of learning. In that process we forget the vital point that each student has his/her own uniqueness. The spontaneity of learning is lost. One does not become stronger or healthier by eating more. The digestion is the key aspect. The same is the true with the knowledge. Continuous supply of the unlimited knowledge without digestion power may be the cause of tremendous stress in New Generation.

The new generation has come to give us the new understanding of humanity. We need to raise our energies to cope up with them. The whole world is out there to teach the student how to live in this world. But we need to teach him "why" to live in this world. Remember that the purpose of life is more valuable than the process.

CA Pranjal Joshi, Pune

Founder Director of DSPPL, Managing partner of CA firm with 22+ Years of experience. Corporate trainer & visiting Faculty for various Management Institutes. Trustee & Financial Advisor to various domestic and International Trusts/NGOs working in the field of sports, medical, employment and Spiritual activities.



Thought for the Month Pastime...



DSPPL

Dear Students of DSPPL

And my young friends,

Pastime...

One Sunday evening, throwing away the mobile,
I went for a stroll to a park far away, about a mile.
The apps and the games had captured my mind,
Realized with a shudder and lifted to meet nature kind.

Into the wilderness I went all alone,
Carrying an itchy feeling of not having the phone.
The sun was setting right in front,
Noticed a small awakening to make patterns blunt.

The flower, the bird, or any animal gave joy a lot.
This pastime made me remember and also the thing I forgot.
Sitting on a rock with eyes closed, I enjoyed the light dim,
The mind became aware and dispelled the grim.

Suddenly the cellphone became less,
The seeking became profound nonetheless.
The large nature took over, gadgets became small,
This pastime made me run every time the trees call.



Viivek A Pandey, Vadodara

Viivek A Pandey is an educator and an author. He has been actively involved with most philanthropic activities initiated by Ajit Sir Guruji. Over the years he has contributed many articles and poems. He envisions to see the world walking towards the path of enlightenment.



Goldilocks and the Three Bears: Finding the 'Just Right' in Money Matters

- CA Amit Dhadphale

The Original Story

Once upon a time, a curious girl named Goldilocks wandered into the house of three bears. She tasted three bowls of porridge: one too hot, one too cold, and one just right. She tried three chairs: one too hard, one too soft, and one just right. She tested three beds: one too big, one too small, and one just right. Suddenly, the bears returned! Goldilocks dashed away, her heart pounding, but she'd learned something important: sometimes, you have to try different things to find what's 'just right' for you.

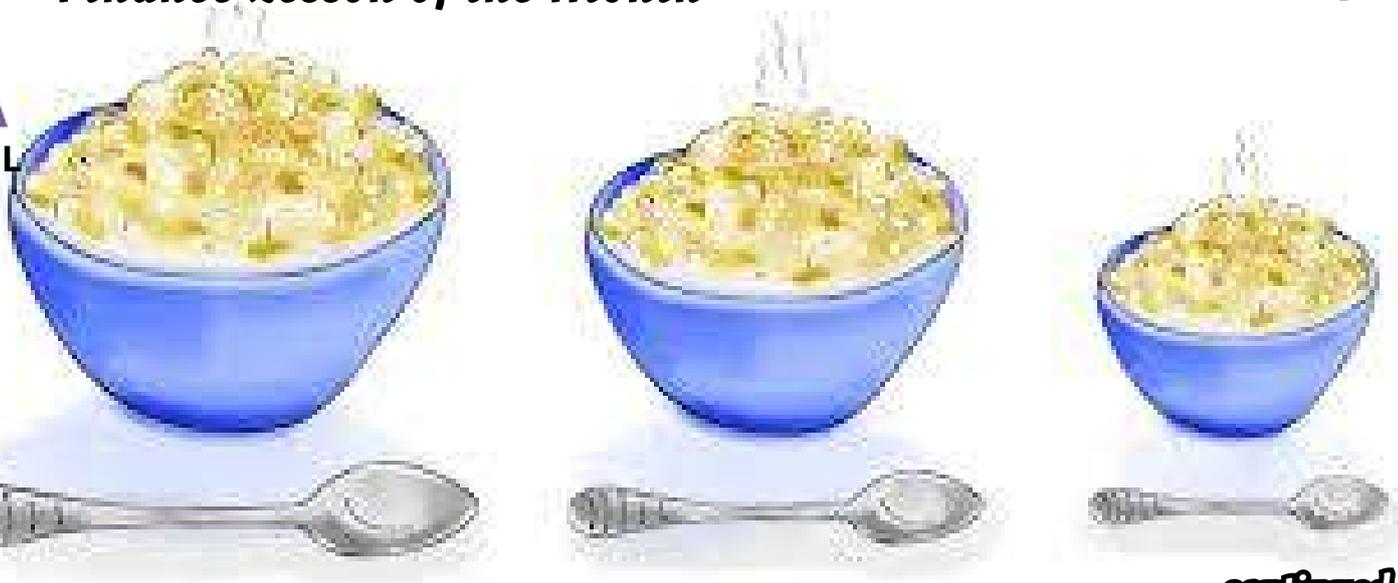
Financial Learnings / Takeaways

- **Balance is Key:** Just like Goldilocks, we need to find the 'just right' balance in how we spend and save money.
- **Avoid Extremes:** Spending too much or saving too little can both cause problems.
- **Test and Learn:** Trying different ways to manage money helps us discover what works best for us.
- **Needs vs. Wants:** Goldilocks didn't settle for the first thing she saw: she explored her options. We should do the same before making purchases.

How Can We Implement These in Our Life?

- **Create a 'Just Right' Budget:** Divide your pocket money into three jars: Spend, Save, and Share.
- **Pause Before You Buy:** Before spending, ask yourself: Is this something I really need, or just something I want right now?
- **Try Different Saving Methods:** Experiment with saving a little more each week or setting a goal for something special.
- **Review Your Choices:** At the end of each week, look at what you spent and saved. Did you find your 'just right' balance, or do you need to adjust?





continued...

✓ Conclusion

- Goldilocks teaches us that finding the 'just right' is important: not only in porridge and beds, but in money too! By balancing our spending and saving, testing different approaches, and thinking before we buy, we can make smart choices and feel happy with what we have. Remember, it's okay to try, learn, and adjust because that's how we discover what's best for us.

🎯 Action Step

- This week, create your own 'just right' budget jars and track your choices. Share your experience with your family: see who finds the best balance!

Happy Reading, Happy Learning!

CA Amit Dhadphale

PS: Views are personal! GenAI was used to develop an iteration of this article. The end product was reviewed and edited by the authors before publication.



CA Amit Dhadphale, Pune

CA Amit Dhadphale is an experienced professional and works with one of the Big 4 accounting firms in India



Industry Inspirations



Interview with Mr. Srikanth Narasimhan

**Co-founder - Veda Corporate
Advisors, a leading
Investment Bank
25+ years corporate
experience**

Q: Kindly introduce yourself Mr. Srikanth Narasimhan. Also share your professional qualifications.

I was born in Delhi, brought up in Chennai, did my BE in Rajasthan (BITS Pilani), worked for 2 years in Lucknow, did my MBA from IIM Bangalore.

I had a 25-year corporate experience in firms like ICICI Venture and Ernst & Young before venturing on my own with 2 other co-founders to start a firm called Veda Corporate Advisors, which today has become a leading mid-market investment bank in India. We have advised companies like Bharat Matrimony, Rainbow Hospitals, Ashirvad Pipes, Aster Healthcare among many others in helping raise private equity, venture capital and mergers & acquisitions.

Q: It is inspiring to know your Academic and Professional career. What do you think is the basic qualification to be in this successful career.

While I have a BE & MBA from leading institutions, my fellow co-founders came from a different educational background with one of them being a Chartered Accountant and the other being a Company Secretary. This goes to show that while education is very important, there are no stereotypes when it comes to starting businesses or who becomes successful in the same. Attitude of a person determines the altitude one achieves.





Q: Thank you for sharing your perspective that there are no stereotypes. This will definitely give our young readers a new vigour in their career path for a bright future. What were the pain areas and challenges in your professional career

With regard to the pain & challenges in the profession, there were the usual challenges of building a team and scaling up. The initial years were about setting a base for ourselves and proving our credentials. The next few years were about trying to build a team so that the organization was not dependent only on the founders.

This was the toughest part of the journey, as it was all about grooming the next set of leaders and holding their hands till they found their own footing. Today, the organization continues to do well despite the founders not being very closely involved in the day to day operations.

With regard to the **turning points in my life**, my career took a turn in a completely different direction through the following events -

a) When I took over as the Secretary of my apartment complex in 2013, I realized that we were facing significant harassment & discrimination from government agencies. This led me to the **founding of Bangalore Apartments' Federation (BAF)**, which has become a very large community of 1,400 apartment complexes representing almost 10 lakh citizens.

b) There was a rule that the Government imposed on apartments asking older apartments to install Sewage Treatment Plants (STP), which was practically impossible to do so. When the Government did not respond to our logical explanations, I organized a protest on 2nd December 2017, in which more than 10,000 apartment residents took part, standing outside their respective apartment complexes in a silent protest. This led to the Government reversing the rule, which showed me that citizens hold significant power if they come together.

c) The final turning point was the death of a 17-year old girl right in front of my apartment complex in 2018. The Benniganahalli junction where I live is a hazardous junction to cross the road and we had been asking for a skywalk on this junction to safely cross the road. However, MLA & Corporator refused to heed to our requests, which ultimately resulted in this death. Even after this death, we had to resort to a protest to get the project sanction, which further got stalled for almost 1.5 years due to corruption. This made me realize that we, the good citizens, also need to get into the system to start cleaning it up from within. This led to me founding Bengaluru NavaNirmana Party (BNP) in September 2019.





Q: This approach to empower the next set of leaders is very commendable. So many feathers on your cap sir. True leadership is felt in your every step. Your enthusiasm for working towards social cause silently is inspiring. Do you pursue any spiritual practices? Also tell us how it shaped your career.

With regard to my spiritual practices, I am not a very religious person, even though I do follow various rituals. For me, spirituality is about acknowledging the presence of the superior power that exists (by whichever name we call, including as God), which we can feel but is beyond our comprehension. I feel that we are all endowed with a lot of power to do a lot, but at the same time, we have to remain humble to acknowledge that it is under the purview of God.

Thank you Mr. Srikanth Narasimhan for taking your valuable time out and giving this interview for our DSPPL readers. I am sure it will inspire all of us to live not only for yourself but also contribute to our nation. Our Guruji's words this is also patriotism.

कांच का टुकड़ा - जयंती काटदरे

एक कांच का छोटा-सा टुकड़ा ऐसे ही मिट्टी में पड़ा हुआ था। एक दिन तेज बारिश की वजह से उस पर लगी मिट्टी निकलने लगी। पानी के साथ बहते-बहते वह एक ऐसी जगह पर जा पहुंचा, जहां उस पर सूरज की बहुत सारी धूप आने लगी। वह धूप में चमकने लगा। जैसे-जैसे मिट्टी कम होती गई, उसकी चमक दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। बाकी कांच के टुकड़े बोलने लगे, "अरे, यह तो कितना बदल गया!" पर उस टुकड़े को पता था कि यह चमक उसकी नहीं, उस सूरज की ही है! वह टुकड़ा दिन-रात ज्यादा से ज्यादा वक्त सूरज की रोशनी की किरणों को पाना चाहता था। उसकी कोशिशों को देखकर सूरज ने उसे ऐसी जगह पर रख दिया कि अब वह पहले से ज्यादा जगमगाने लगा। उसमें आए परिवर्तन को देखकर बाकी कांच के टुकड़े पूछने लगे, "ऐसा क्या है? इतना बदलाव तुझमें कैसे आ गया?" टुकड़े को भी लग रहा था कि पहले से कुछ तो अच्छा हो रहा है, पर वह क्या है? वह सोचता रहा। फिर एक दिन उसे पता चला कि सूरज के बारे में दिन-रात सोचने की वजह से वह मन ही मन सूरज से जुड़ गया। और इसी कारण उसे ऐसी जगह मिली, जहां उस पर ज्यादा से ज्यादा रोशनी आए। उसने फिर सोचा, "क्या सिर्फ इतना ही कारण है?" बाद में अंदर से एक आवाज आई, "पता चला, मैं सूरज की किरणों का माध्यम बन गया हूं और मैंने इसका स्वीकार कर लिया है।"



CONSTITUTION OF INDIA

- **Kalpita Rakesh**

Chor–Police and Article 22

Characters:

- Riya (playing police)
- Samir (playing thief, son of a police inspector)
- Amit & Neha (friends watching)

Scene: School playground. A group of children are playing Chor–Police.

(Today in the school playground, children are playing Chor–Police. Riya is the police officer, and Samir is the thief)

Riya: (catches Samir, proudly) Aha! Chor pakda gaya! Now you go to jail! (points to a corner as the “jail”)

Samir: (raises hand, serious tone) Wait, Madam Police! Before you put me in jail, do you even know my rights?

Riya: (confused) Rights? You’re the thief. You just go inside!

Amit: (laughing) Arrey Samir, it’s just a game!

Samir: (grinning) I know, but my father is a police inspector. I often hear him talk about what happens when someone is arrested. It’s written in our Constitution—**Article 22!**

Neha: (curious) Really? What does it say?

Samir: (acting serious like a police inspector) Rule number one—If police arrest someone, they must tell the person why they are being arrested.

Riya: (crosses arms, dramatic) Fine! You are arrested for stealing the ball!

Samir: Rule number two—The arrested person has the right to talk to a lawyer.

Amit: (pretends to be a lawyer) Don’t worry, Samir, I will fight your case!

Neha: (curious) Really? What does it say?

Samir: (acting serious like a police inspector) Rule number one—If police arrest someone, they must tell the person why they are being arrested.

Riya: (crosses arms, dramatic) Fine! You are arrested for stealing the ball!

Samir: Rule number two—The arrested person has the right to talk to a lawyer.

Amit: (pretends to be a lawyer) Don’t worry, Samir, I will fight your case!



Understanding Constitution Part 12 (Article 21)

Samir: Rule number three—The police must take the arrested person to a magistrate, a judge, within 24 hours.

Neha: (pretending to be judge, raising a ruler like a gavel) Bring the chor to me at once!

Samir: And finally, unless the judge allows, the police cannot keep anyone in jail beyond 24 hours.

Riya: (pretends shocked) Oh! That means I cannot just lock you up forever?

Samir: Exactly. Article 22 protects everyone from unfair arrest.

Amit: (curious) But Samir, what if someone is planning a very big crime—like blowing up the school bus or smuggling dangerous things? Do police have to wait till they do it?

Samir: (serious tone, explaining) No. That's where preventive detention comes in.

Riya: Preventive... what?

Samir: Preventive detention means stopping someone before they commit a serious crime—if the government has strong proof they are planning something harmful. For example if Amit was secretly planning to steal everyone's lunch boxes tomorrow—

Amit: (shocked, laughs) Arrey, I'm innocent!

Samir: (grinning) Then Riya, as the police, could stop him today itself—before he actually steals! That's preventive detention.

Neha: Ohhh! So it's like stopping trouble before it begins.

Riya: But can I keep Amit in jail forever then?

Samir: (shakes head) No way! Preventive detention has limits too. Usually only up to 3 months, unless Parliament gives special approval. Otherwise, the person must be released.

Riya: (smiling) Okay, fine. You are the smartest chor I've ever caught!

Kalpita Rakesh Vazhayil, Mumbai

A postgraduate in Inorganic Chemistry from Wilson College, has also completed a Postgraduate Diploma in Materials Management from IIMM and a Certificate Course in Foreign Trade. With over a decade of experience in logistics, her latest venture is Samruddhi Niryat, which aims at promoting health and sustainability through millets. A theater enthusiast who thrives on exploring and learning new fields.



DSPPL COMICS

Story: Komal Madam

Illustrations: Ashish



Komal Amol, Bengaluru

She has been associated with Reiki Vidya Niketan since 2007 and one of our DSPPL teachers for subjects like Ancient Science, Drop IT and Agnihotra. Professionally she is a Software Engineer working in an IT firm in Bangalore.





+919850035736

+918097033220



www.dsppl.in



info.dsppl@gmail.com



**Brahmakamal Ashram, Swami Samarth
Marg, Devrukh, Ozare (Khurd), Tal.
Sangameshwar, Dist. Ratnagiri,
Maharashtra- 415804**

Book Name : Tapasya



9 788198 582492

www.dsppl.in